पाठ–11

चंबल की आत्मकथा

मैं चंबल हूँ। विंध्याचल पर्वत की जनापाव पहाड़ी मेरा घर है। यह स्थान मध्यप्रदेश के इंदौर ज़िले में मऊ के पास है। मैं यहाँ से निकली तो यह नहीं सोचा था कि रास्ता इतना दुर्गम होगा! कितने गाँव–शहर मेरे अपने होंगे। मैं छोटी–सी धार सरसराती निकल पड़ी। पहाड़ों के कठिन जीवन का थोड़ा अनुभव था, लेकिन मैदान व घाटी की निर्जनता का भान नहीं था। लोगों का प्यार और स्नेह मिलता गया, मैं बढ़ती गई। किसी की मेरे घरघराते प्रवाह को देखकर सिट्टी–पिट्टी गुम हो गई तो कोई अभावों की दुनिया में आशा की एक किरण के रूप में मुझे देख रहा था। मध्यप्रदेश के मंदसौर ज़िले में सर्वप्रथम मेरी घेराबंदी की गई। नाम दिया–गाँधीसागर बाँध। लगा कि अब बस मेरी इतिश्री हो जाएगी, लेकिन मुझे अपने पिता विंध्याचल से मिली यह सीख याद आ गई–

चरैवेति चरैवेति यही तो मंत्र है अपना।
सतत चलना, नहीं रुकना, शुभंकर मंत्र है अपना।

मैंने हिम्मत नहीं हारी और आगे बढ़कर चित्तौड़गढ़ ज़िले के चौरासीगढ़ में राजस्थान की पवित्र भूमि का स्पर्श किया। मेरा जीवन वीरान जंगलों, भरकाओं और डाँग क्षेत्रों में समाया हुआ है। इन वीरानियों में मैंने शेर, भालू, चीते, जरख, मगरमच्छ और घड़ियालों के बीच उजड़ते और बसते लोगों को देखा है। कभी गरजती बंदूकों की खौफ़नाक जिंदगियों ने मुझे घेरा तो कभी बॉलीवुड की जमात ने मुझे फिल्मों के पर्दे पर दिखाकर कुतूहल का विषय बनाया। मुख्यधारा से भटके जन मेरी शीतलता पाकर सात्विक जीवन में लौटे। आज भी अनेक परिवार मेरी क्रोड़ में शहर की चकाचौंध से दूर

जीवन जी रहे हैं। मैं अपनी वीरानी के बीच उन्हें बढ़ते देखना चाहती हूँ। बन्दूक की जगह कलम देखकर मुझे खुशी होती है। मैंने अपने मार्ग में ऊबड़–खाबड़ धरातल, टेढ़े–मेढ़े रास्तों से कभी भय नहीं खाया। धैर्य नहीं छोड़ा। युग बदला, शासन बदला, पुल बने, मार्ग सुगम हुए।

मैंने रावतभाटा को परमाणु नगरी बनते देखा है। चित्तौड़गढ़ ज़िले की भैंसरोडगढ़ तहसील में मेरा जल राणा प्रताप का नाम पाकर धन्य हो गया। मुझे गर्व है कि यहाँ बना बाँध राजस्थान का सबसे बड़ा बाँध है। जवाहर सागर व कोटा बैराज भी मेरे अपने ही हैं। मैं जंगल की रानी थी, लेकिन भैंसरोडगढ़ में मेरे तट पर सुंदर जल दुर्ग बना तो मैं फूली नहीं समायी। भैंसरोडगढ़ किला राजस्थान का 'बैल्लौर' कहलाता है। मुझे राजस्थान के छह ज़िलों का अक्षुण्ण साथ मिला है। ये ज़िले हैं – चित्तौड़गढ़, बूँदी, कोटा, सवाईमाधोपुर, करौली व धौलपुर। इतने मित्रों को पाकर मैं अपना घर छोड़ने का दर्द भूल गई। मुझे अनेक सहेलियों ने अपने अकूत जल का उपहार देकर मालामाल कर दिया। बामनी, सीप, मेज कुराल, घोड़ा पछाड़, कुन्नू, पार्वती, परवन, आहू, कालीसिंध और बनास के इस उपकार को मैं भूली नहीं हूँ पर आज इनकी सूखी धारा मुझे विचलित करती है। अब मैं चाहती हूँ कि इनकी मदद का समय आ गया है। मुझे इनसे जोड़कर आप इनको भी सदानीरा कर सकते हैं। भैंसरोडगढ़ के अलावा कोटा, केशोरायपाटन, पालीधाम, रामेश्वरधाम, धौलपुर जैसे स्थान मेरे किनारे पर बसे तो मेरा जीवन सरस हो गया। मेरे लिए कोटा में उद्यान बनाया गया। यहाँ खिलते फूल, मुस्कुराते चेहरे, उड़ती तितलियाँ व चहकते पक्षी मेरा स्वागत करते हैं। मुझे कोटा बैराज में एक बार फिर कैद किया, लेकिन जब मैंने देखा कि मेरी इस कैद से दूसरों का कायाकल्प हो रहा है तो मैं अपना दर्द भूल गई। मेरा पानी नहरों में गया तो खेती लहराई। प्यासे को मिला तो प्यास बुझी। बाढ़ की विभीषिका थमी। बिजली से घर रोशन हुए। मुझे रहीम याद आ गए–

तरवर फल नहीं खात है, सरवर पिए न पान।
कहै रहीम पर काज हित, सम्पति संचै सुजान।

केशोरायपाटन में केशव जी व मुनि सुव्रतनाथ के दर्शन तथा अजीज मक्की साहब की दरगाह होती हुई मैं पालीधाम व रामेश्वरधाम तीर्थ पहुँची। पालीधाम में झरैल के बालाजी व रामेश्वरधाम में चतुर्भुजनाथ जी का आशीष मिला। सवाईमाधोपुर का रामेश्वरधाम त्रिवेणी, सीप व बनास के अथाह संप्रण का परिचायक है। धौलपुर ज़िले में कुदिन्ना गाँव में बाबू महाराज के थान की घंटियों से मेरा मन भक्ति से आप्लावित हो उठता है। धौलपुर में चंबल सफ़ारी में नौका विहार करते पर्यटक मेरे खौफ़नाक जीवन पर सरसता व आनंद की विजय है। आज भी अनेक गाँवों की सूखी धरती व प्यासे लोगों को देखकर मेरा गला भर

आता है।

सवाईमाधोपुर व भरतपुर ज़िलों के अलावा करौली व धौलपुर ज़िलों में भी लिफ्ट योजना द्वारा मेरे जल से हरियाली आ जाए तो मैं इसे अपने जीवन की सार्थकता मानूँगी।

बरसात के दिनों में पूरे क्षेत्र का पानी उमड़ पड़ता है तो मैं तनिक अहंकारी और अमर्यादित हो जाती हूँ। मेरा यह वेग बाढ़ का रूप धारण कर लेता है। इसके लिए मुझे दोषी ठहराने से पूर्व मनुष्य को अपनी गलतियों के बारे में भी सोचना चाहिए। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई व अवैध खनन ने भी मुझे उग्र किया है। खतरे के निशान से ऊपर आते ही आप को सावधान हो जाना चाहिए। जब मेरा वेग प्रचण्ड होता है तो दुखांतिका घटित हो जाती हैं। इससे मुझे अपार पीड़ा होती है। आपकी सजगता मुझे इस कलंक से बचा सकती है।

राजस्थान व मध्यप्रदेश के बीच लगभग 250 किलोमीटर की सीमा में मुझे जो प्यार व स्नेह मिला उसे मैं भुला नहीं सकती। मुझे 'चंबल मैया' कहा जाता है। मैं माँ का दर्जा पाकर धन्य हो गई। मैं अपनी संतति के लिए सब कुछ देने को तैयार हूँ। लिफ्ट लगाकर मेरा जल कहीं भी ले जाओ, बाँध बनाकर बिजली बनाओ या उद्योग, खेती और उद्यानों को सिंचित करो परंतु माँ के अस्तित्व के लिए एक विनती है कि कल–कारखानों के अपशिष्ट पदार्थ, शहर के गंदे नाले, मृत जानवरों के शव आदि मुझमें मत फेंको। इनसे मेरा दम घुटता है। मेरी सखियाँ इसी बीमारी से दम तोड़ रही हैं। शास्त्रों में कहा गया हैं कि जो धर्म की रक्षा करते हैं धर्म उनकी रक्षा करता है। आप मेरी रक्षा करेंगे तो मैं आपकी रक्षा करूँगी। उपकार करोगे तो उससे मैं सदैव कृतज्ञ रहूँगी।

आपके प्यार और सद्भाव ने मुझ छोटी–सी धारा को लगभग 965 किमी. तक जाने का जो हौसला दिया उसी से मैं यमुना तक पहुँची हूँ। उत्तरप्रदेश के इटावा ज़िले के मुरादगंज में यमुना बहिन से मिलकर मेरे आँसू छलक पड़े। अपने प्रियतम सागर तक मेरा नीर निर्मल बना रहे, यह तो केवल आप ही के हाथ में है।

शब्दार्थ

अथाह	–	जिसकी कोई थाह न हो	पर्यटक	–	भ्रमण करने वाले
आकर्षण	–	लुभाना अपनी ओर खींचना	सुलभ	–	आसानी से उपलब्ध होना
निर्मल	–	मल रहित, स्वच्छ	सदानीरा	–	सदैव जल से युक्त
नित्यवाहिनी	–	रोजाना बहने वाली	अक्षुण्ण	–	कभी नष्ट न होने वाला
अकूत	–	असीमित			

अभ्यास कार्य

पाठ से

उच्चारण के लिए

विंध्याचल, विभीषिका, सुव्रत, आप्लावित, अक्षुण्ण, कायाकल्प

सोचें और बताएँ

1. यह पाठ किस विधा में लिखा गया है?
2. चंबल नदी ने किन–किन नदियों के उपकार का बदला चुकाने की बात कही है ?
3. नदी किस ऋतु में अहंकारी और अमर्यादित हो जाती है?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. चंबल नदी का उद्गम स्थान है –

   (क) मध्यप्रदेश (ख) राजस्थान

   (ग) उत्तरप्रदेश (घ) महाराष्ट्र ( )

2. चंबल नदी पर बना राजस्थान का सबसे बड़ा बाँध है–

   (क) गाँधी सागर (ख) राणा प्रताप सागर

   (ग) जवाहर सागर (घ) कोटा बैराज ( )

कथन के सामने सत्य या असत्य पर निशान लगाएँ–

(1) चंबल को प्राचीन काल में चर्मण्यवती के नाम से जाना जाता था। सत्य / असत्य

(2) चंबल नदी यमुना नदी में मिल जाती है। सत्य / असत्य

(3) जयपुर चंबल नदी के किनारे बसा है। सत्य / असत्य

(4) भैंसरोडगढ़ कोटा ज़िले में हैं। सत्य / असत्य

मिलान कीजिए

बाँध	**ज़िला जहाँ निर्मित है**
जवाहर सागर	मंदसौर
गाँधी सागर	कोटा
कोटा बैराज	चित्तौड़
राणाप्रताप सागर	बूँदीं–कोटा

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. परमाणु नगरी किसे कहा गया है?
2. राजस्थान का सबसे बड़ा बाँध कौन–सा है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. चंबल नदी से हमें क्या–क्या लाभ हैं?
2. बाँध क्यों बनाए जाते हैं ?
3. नदियों को प्रदूषित होने से बचाने के लिए क्या करना चाहिए ?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. चंबल नदी हमारे किस व्यवहार से दुखी है ?अपने शब्दों में लिखिए।
2. चंबल नदी के किनारे कौन–कौनसे दर्शनीय स्थल बने हुए हैं ?
3. चंबल नदी राजस्थान के किन–किन ज़िलों में होकर निकलती है ?

भाषा की बात

1. 'प्रदूषित' शब्द प्र + दूषित शब्द से बना है।

कुछ शब्दांश शब्द के प्रारम्भ में जुडकर नया शब्द बनाते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं; जैसे– प्रदूषित शब्द में 'प्र' उपसर्ग है। पाठ में 'प्र' उपसर्ग से बने शब्द छाँटिए।

आप भी 'हार' शब्द में निम्न उपसर्ग जोड़कर शब्द बनाएँ –

प्र वि उप आ

'सु' उपसर्ग लगाकर तीन शब्द बनाएँ।

पाठ से आगे

1. चंबल नदी ने अपने जीवन के बारे में बताया है। आप भी अपने जीवन के बारे में लिखें और कक्षा में सुनाएँ।

यह भी करे

1. आपके गाँव या शहर के पास कौनसी नदी बहती है? यह भी जाने कि इस नदी के पानी का उपयोग किस प्रकार किया जाता हैं?इस नदी को प्रदूषण से बचाने के लिए आप क्या करेंगे ?
2. पानी सीमित है। कई स्थानों पर आपने जल की बरबादी देखी होगी। आप इसे रोकने के लिए क्या–क्या उपाय सोचते हैं?

   विश्व में उपलब्ध जल का 91 प्रतिशत भाग महासागरों में है, जो पीने के योग्य नहीं है। नदियाँ सतही जल का अच्छा स्रोत हैं। राजस्थान सहित पूरे देश में पेयजल को सुरक्षित करने के लिए नदियों को प्रदूषण से बचाना बहुत आवश्यक है। 'जल है तो कल है' जल संरक्षण आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। अपने आसपास के कुंए, तालाब व नदियों की सुरक्षा करके तथा लोगों को जागरूक करके आप भी इस कार्य में योगदान कर सकते हैं।

केवल पढ़ने के लिए

बड़ा पुरस्कार

एक बार लंबी दूरी की एक बस अचानक खराब हो गई। रात का समय था। वह स्थान भी बड़ा सुनसान था। चालक ने देखा कि यात्री चिंतित और भयभीत हो रहे हैं। वह बस को ठीक करने के लिए नीचे उतरने लगा। यह देख परिचालक (कंडक्टर) बोला – ''तुम क्यों इसे ठीक करने के झंझट में पड़ते हो? आराम से सो जाते हैं। कल सुबह जब दूसरी बस आएगी तो इसके यात्रियों को उसमें बैठा देंगे।'' ''इससे यात्रियों को परेशानी होगी। पता नहीं कौन अपने किस काम से कहीं जा रहा है ? किसका कितना आवश्यक कार्य हमारे ज़रा से आराम से रुक जाए? आराम से सोने के लिए तो कल के दिन का समय ही काफी है।'' चालक ने यात्रियों की परेशानी को देखते हुए कहा। परिचालक बोला – ''तुम तो हमेशा दूसरों की परेशानी देखते रहते हो। इससे तुम्हें कोई पुरस्कार तो मिलेगा नहीं।''

''हर कार्य पुरस्कार के लिए ही नहीं किया जाता है। अपना कर्तव्य पालन करके हमें जो खुशी मिलती है, वह किसी पुरस्कार से बढ़कर होती है।'' चालक बस को ठीक करने लगा। उसकी कर्तव्य परायणता का बस में बैठे लोगों पर बड़ा असर पड़ा। सभी राहत महसूस कर रहे थे और अपने दिल में सोच रहे थे कि अगर हम सभी लोग अपने कर्तव्य का पालन करें तो निश्चय ही सुखी जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

एक यात्री ने अगले दिन यह घटना लिखकर समाचार पत्रों में भेज दी। दूसरे दिन यह घटना प्रकाशित हुई। चालक को तो मानो बहुत बड़ा पुरस्कार मिल गया था।